भजन

तर्ज–मेरे दो अनमोल

मेरे दो अनमोल रतन रामरतन और जागनी रतन

1–रामरतन जी ने मरजीया होकर, गहरे सागर में गोता लगाया
सीप और कंकर निरख परख के,उनमें से इक मोती पाया
शफकत बरकत से बना है रतन,रामरतन...

2–रामरतन जी ने प्यार सीखा कर,ऊंच नीच का भेद मिटाया
जागनी रतन जी ने सेवा करके, तन मन धन सब धनी पे लुटाया
साथ की सेवा में हुए हैं मगन,रामरतन..

3–हादी के कदमों पे चल कर,जागनी रतन जी ने चल कर दिखाया
गांव गांव और नगर नगर में,जागनी का अभियान चलाया
बिछुड़ी रूहों का किया है मिलन,रामरतन...

4–काम धनी का धनी ही कराते,चर्चा सुना कर धनी ही जगाते
देते हैं शोभा रूहों के तन को,मूल वतन अपना दिखाते
अन्दर आए के बैठे हैं खसम